बिन पानी सब सून

नवनीत कुमार गुप्ता

मार्च-अप्रैल के महीने से ही देश के अनेक हिस्सों में जल संकट गहराने लगता है। प्रत्येक साल जल संकट बढ़ता ही जाता है। वैसे यह विडम्बना ही है कि जहां एक ओर हमारे देश के कुछ हिस्सों में पानी लाने के लिए महिलाओं को कई कोस चलना पड़ता है वहीं कुछ लोग पानी का अंधाधुंध अपव्यय करते हैं। यह स्थिति तब है जब सभी को पता है कि पानी की प्रत्येक बूंद अनमोल है। फिर भी न जाने क्यों यह कहावत भूलने लगे हैं कि बूंद-बूंद से घड़ा भरता है। इसलिए आज भी अनेक नलों पर टोंटी नहीं लगी होती, जिससे पानी की बर्बादी होती है। वैसे तो हर साल 22 मार्च को विश्व जल दिवस के रूप में मनाया जाता है लेकिन फिर भी जनमानस में पानी के संरक्षण को लेकर अभी तक पूरी जागरूकता नहीं आई है।

हम जानते हैं कि पृथ्वी पर जीवन के स्थायित्व के लिए पानी की अहम् भूमिका है। पृथ्वी पर पानी करोड़ों वर्षों तक चली क्रियाओं का परिणाम है। पृथ्वी के जन्म के समय यानी करीब चार-पांच अरब वर्ष पहले यहां न तो पानी था और न ही जीवन। आरंभिक समय में तो पृथ्वी का तापमान इतना अधिक था कि बारिश का पानी तुरंत ही भाप बन जाता था। जैसे-जैसे पृथ्वी का तापमान कम होता गया, वायुमंडल में फैली नमी तरल पानी में बदल कर अनवरत वर्षा के रूप में पृथ्वी पर गिरने लगी। इस प्रकार से वर्षा का जल पृथ्वी के गड्ढों में इकट्ठा होने लगा। इस प्रक्रिया के करोड़ों वर्षों तक जारी रहने के उपरांत महासागरों का जन्म हुआ। इस प्रकार हमारी पृथ्वी का लगभग दो-तिहाई भाग पानी से घिर गया और शेष भाग ऊंचाई पर स्थित होने के कारण द्वीपों के रूप में अस्तित्व में आया। पृथ्वी पर जीवन का आरंभ महासागरों से माना जाता है। पानी में ही पहली बार जीवन का अंकुर फूटा था। तब से ही पानी पृथ्वी पर जीवन का प्रतीक है।

सभी जानते हैं कि पानी का मुख्य स्रोत बारिश है। सभी स्रोतों में, चाहे वह नदी हो या नहर या ज़मीन के नीचे मौजूद पानी का अथाह भंडार, जल की आपूर्ति बारिश द्वारा ही होती है। हमारे देश में भारी बारिश लगभग 100 घंटों में हो जाती है। यानी साल के 8,760 घंटों में हमें सिर्फ 100 घंटों में बरसे पानी से ही काम चलाना है।

वर्तमान में प्रदूषण के कारण जल की गुणवत्ता में गिरावट आई है। औद्योगीकरण और सघन कृषि तथा शहरीकरण के चलते हमने सतही जल के साथ-साथ भूजल का अंधाधुंध दोहन किया है। आज पानी की मात्रा और गुणवत्ता दोनों में भयानक कमी देखी जा रही है। कई इलाकों में पानी में इतने भारी तत्व और अन्य खतरनाक रसायन प्रवेश कर चुके हैं कि वह पानी अब किसी भी जीव के उपयोग के लिए सही नहीं है। आज समाज और व्यक्ति 'बिन पानी सब सून' जैसी पुरानी और सार्थक कहावतों को भूलकर, पानी को संचय करने की हज़ारों साल पुरानी परंपराओं को भूल गया है जिसके परिणामस्वरूप भारत समेत विश्व के अधिकतर देशों को गंभीर जल संकट का सामना करना पड़ रहा है।

पानी में यह ज़हर या प्रदूषण विभिन्न माध्यमों से जैसे औद्योगिक तरल अपशिष्ट को सीधे नदी में बहा देने या घरेलू खतरनाक अपशिष्ट को सीधे नदी में डाल देने से फैलता है। इसके अलावा कृषि में उपयोग किए गए रसायनों जैसे रासायनिक खाद, खरपतवारनाशी, कीटनाशी आदि के पानी में घुल जाने से भी पानी की गुणवत्ता प्रभावित होती है। इसके अलावा जैविक पदार्थ और मल आदि से भी नदियों का पानी दूषित होता है। एक अध्ययन के अनुसार भारत में मानव और पशुओं के अपशिष्ट के प्रबंधन की कोई सही व्यवस्था नहीं है। हालांकि यह समस्या ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में समान ही है, परन्तु तेज़ी से बढ़ते महानगरों में

अपशिष्ट के प्रबंधन की समस्या ज़्यादा गंभीर है। लुगदी और कागज़ उत्पादन जैसी औद्योगिक गतिविधियां, जिनमें काफी बड़ी मात्रा में जैविक पदार्थ नदियों में मिलाए जाते हैं, इन सभी से नदी की इकॉलॉजी बिगड़ती है। जैविक पदार्थों को नदी में डालने से नदी में घुली हुई ऑक्सीजन की मात्रा में कमी आ जाती है।

लेकिन इन सबसे ज़्यादा खतरनाक है नदी में मानव द्वारा निर्मित जैविक प्रदूषकों और भारी तत्त्वों का घुलना। इलेक्ट्रोप्लेटिंग, रंगाई के कारखाने और धातु आधारित उद्योगों आदि के कारण भारी तत्त्वों का काफी बड़ी मात्रा में उत्सर्जन होता है, जो नदी में घुल जाते हैं और इससे पूरे मानव समाज के साथ-साथ पशु-पक्षियों और नदी के जीवों पर भी भयानक प्रभाव पड़ता है। पेंट, प्लास्टिक आदि उद्योगों के अलावा गाड़ी आदि के धुएं में भी सीसे, पारे जैसे भारी तत्त्वों की काफी मात्रा होती है और ये कैंसर जैसे रोग पैदा करने के साथ-साथ सांस की भयानक बीमारियों को जन्म देते हैं और बच्चों में मस्तिष्क का विकास भी प्रभावित होता है। तरह-तरह के त्वचा रोग भी इन प्रदूषकों की ही देन हैं।

जल की गुणवत्ता में गिरावट और संदूषण के लिए मुख्यतः औद्योगिक, घरेलू, कृषि रसायनों तथा अंधाधुंध पानी के दोहन को ही ज़िम्मेदार माना जाता है। भारत में हुए एक अध्ययन का यह निष्कर्ष निकला है कि ज़्यादातर भूजल संदूषण शहरी विकास के संदर्भ में बनाई गई गलत और अनुपयोगी नीतियों का ही नतीजा है। उद्योगों में जल को बगैर उपचारित किए बहा देना, कृषि में रासायनिक खाद और कीटनाशकों का अत्यधिक प्रयोग और इसके साथ-साथ भूमि में जमा जल का सिंचाई के लिए गैर-ज़रूरी दोहन, पानी में घुलते ज़हर की समस्या में भारी इज़ाफा करते हैं।

अस्सी के दशक में हुए एक सर्वेक्षण से यह सामने आया था कि भारत में करीब 7452 करोड़ लीटर अपशिष्ट जल प्रति दिन पैदा होता है, जो आज इससे कई गुना बढ़ गया है। अगर इस दूषित जल का उपचार ठीक से न किया गया तो यह बहुमूल्य भू-जल को भी विषैला बना देगा।

पश्चिम बंगाल के आठ ज़िलों में आर्सेनिक की विषाक्तता पाई गई है। पारा पश्चिम बंगाल से लेकर मुम्बई के तटों पर भी मौजूद है। भारत में तेरह राज्य फ्लूरोसिस से ग्रस्त घोषित किए गए हैं। फ्लूरोसिस प्राकृतिक रूप से मौजूद फ्लोराइड के खनिजों की अधिकता से होता है। भारत में करीब 5 लाख लोग फ्लोराइड की अधिकता से पीड़ित हैं। इसी तरह, भारत के कुछ राज्यों में पानी में लौह तत्त्व की भी अधिकता देखी गई है। हालांकि लौह हमारे शारीरिक तंत्र को ज़्यादा नुकसान नहीं पहुंचाता, परन्तु लम्बी अवधि में यह ऊतकों को नुकसान पहुंचाना शुरू कर देता है।

हम रोज ज़हर पानी में घोल भी रहे हैं और उसका सेवन भी कर रहे हैं। पानी में घुला ज़हर हर वनस्पति में अवशोषित होता है तथा वहां से हमारे भोजन में। इन संदूषकों के प्रभाव विध्वंसकारी हैं जो वक्त के साथ-साथ हमें अपने शरीर की घटती प्रतिरोधक क्षमता, बढ़ती बीमारियों और खत्म होते जीवन के रूप में दिखाई दे रहे हैं। हमने पानी और अपने जीवन में बहुत ज़हर घोल लिया है। अब ज़रूरत है जल के संरक्षण के लिए प्रयासरत हो जाने और धरती पर जीवन को पोषित करने वाले जल को शुद्ध और स्वच्छ बनाए रखने की। ***(स्रोत फीचर्स)***

वर्ग पहेली 80 का हल

फु	कु	शि	मा		सू	ज	न	
	पो		न	क्ष	त्र		क	पि
	ष		सि				सी	
प्रा	ण		क	द		च	र	स
ची		च		वा		क्षु		र
र	ब	र		त	ट		क	ल
	घ				क		ल	
का	न		जि	ज्ञा	सा		क	
	खा	द्या	न्न		ल	स	ल	सा